रूहानी सत्संग No. K-13

उस्तत निंदा दोऊ बिबरजित

(1) उस्तत निंदा दोऊ बिबरजित, तजो मान अभिमाना॥

कबीर साहब की यह वाणी है। सब संतों महात्माओं की एक जैसी वाणी है। जो भी मालिक को पहुंचे, खाह (चाहे) वे नामदेव जी थे, शम्स तबरेज़ थे या मौलाना रूम, सब महात्माओं ने एक ही बात का इशारा अपनी अपनी ज़बान में दिया। ये सब रूहानी तालीम के खज़ाने हमारे पास मौजूद हैं। संतों महात्माओं के ये कलाम हमारी रहनुमाई (पथप्रदर्शन) के लिए हैं ताकि हम अपने आप को जानें और परमात्मा से मिलने का यत्न करें जो मनुष्य जीवन का मुख्य आदर्श है।

खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश, उपदेश चहुं वर्णों को साँझा॥

चारों वर्णों के लिए एक ही उपदेश है, वह है नाम का उपदेश। इंद्रियों के घाट से ऊपर आना और आगे नाम से लग कर अनाम और अशब्द में लय होना। शरीयतें (सामाजिक रीति-रिवाज) अपनी अपनी हैं आबो हवा (जलवायु) और जुगराफियाई (भौगोलिक) हालात के मुताबिक (अनुसार) अलग-अलग रस्म रिवाज हैं लेकिन गर्ज़ (ध्येय) सब की एक है, सदाचार का जीवन बसर (व्यतीत) करना, बाहर की रहनी में भी और अंतर में भी। बाहर का सदाचार यह है कि नेक पाक (पवित्र) जीवन हो, सब से प्यार हो, इंसान अच्छा शहरी (नागरिक) बने और अंतर्मुख अपनी आत्मा को मन-इंद्रियों से आज़ाद करके, अपने आप को जाने और परमात्मा से जुड़े। किसी भी ऋषि, मुनि, महात्मा की वाणी ले लो, वे पुराने हों या नए, सब की एक ही कलाम है। डाक्टर पुराना हो या नया, जिस्म ही का ब्यान करेगा, बीमारी का इलाज भी एक जैसा है सब के लिए। बुखार हो, किसी को हो, हिंदू को हो, मुसलमान को हो, सिख को या ईसाई को, उसका इलाज, मिसाल के तौर पर, गलोय का सैंतें है, यह सब के लिए एक ही दवा है। यह नहीं कि हिंदू के लिए कोई और दवा है और मुसलमान के लिए कोई और दवा है। ये तफर्के

(भेदभाव) हमारे अपने पैदा किए हुए हैं। ये सब आपस के झगड़े और मतभेद मज़हब (धर्म) के गलत प्रचार का नतीजा (परिणाम) हैं। परमात्मा ने तो इन्सान बनाए हैं, ये हिंदू मुसलमान के भेदभाव हमारे पैदा किए हुए हैं। जिन्होंने इंसानियत (मनुष्यत्व) का शरफ (महत्व) सम्भाल लिया (मनुष्य के अंतर जो आत्म तत्व है उसको जान लिया), जिन्होंने महात्माओं के वचनों पर फूल चढ़ाए, वे मनुष्य जीवन के उच्चतम आदर्श को पा गए और अपना जीवन सफल कर लिया। शरीयत (समाज धर्म) जो जिस्म से ताल्लुक (संबंध) रखती है, केवल शरीयत (समाज धर्म) का पालन करके ही कोई नेक पाक नहीं बना। जब दुनिया का ही काम न हुआ तो आत्मा का क्या काम बनेगा शरीयत (समाज धर्म) से। इसलिए महात्मा न तो कोई नई शरीयत (समाज) बनाते हैं न पुरानी शरीयत को तोड़ते हैं। अपनी-अपनी शरीयत (समाज) में रहते हुए इंसानी ज़िंदगी का मक़सद (ध्येय) पूरा कर लो, यही सारे महात्माओं का उपदेश है।

सन्तों का उपदेश सारे जहान को एक जैसा है। यह उपदेश As a whole (सांझा) सारी मनुष्य जाति के लिए है। वहां हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई का सवाल नहीं। ये कौमों और मज़हबों की तक़सीम और दायरे हमारे अपने बनाए हुए हैं, परमात्मा ने तो इंसान बनाए हैं आत्मा देहधारी। श्री गुरु नानक साहब से काज़ी ने पूछा कि तुम कौन हो तो उन्होंने कैसा मुकम्मल (पूर्ण) जवाब दिया है:

हिंदू कहां ते मारिए मुसलमान भी नाहिं।
पाँच तत्त का पुतला, गैबी खेले माहिं॥

उन्होंने कहा कि तुम्हारी नज़र तो बाहरी बनावट पर है। अगर मैं कहूं कि मैं हिन्दू हूं तो तुम मारोगे और तुम जिसे मुसलमान कहते हो मैं वह भी नहीं हूं। यह शरीर पांच तत्व का पुतला है जिस में गैबी (अदृश्य) ताकत काम कर रही है, यह है इंसान की हकीकत। सब संतों का एक ही मत है। यह गैबी ताकत जो इस पांच तत्व के पुतले में (मनुष्य शरीर में) काम करती है, आगर वह हिंदू है तो हम सब हिंदू हैं, अगर वह मुसलमान है तो हम सब मुसलमान हैं। वह गैबी ताकत कौन है? आत्मा। और आत्मा की जात वही है जो परमात्मा की। अगर इस असूल को

पकड़ लिया जाए तो सब जगह शांति हो जाए, सारे झगड़े खत्म हो जाएं। सो संतों का उपदेश सब के लिए सांझा है।

कौमों और मज़हबों की भी ज़रूरत है। इंसान Social (सामाजिक) है। किसी न किसी गिरोह या जमात में अपने जैसे ख्याल के लोगों में मिल बैठना इस की फितरत (स्वभाव) है। हमें किसी न किसी शरीयत (समाज धर्म) में रहना है लेकिन असल गर्ज़ (ध्येय) सारी शरीयतों की यह है कि इंसान नेक पाक रहे। सो कबीर साहब ने यहां बताया है कि इंसान को कैसे रहना चाहिए। फरमाते हैं कि स्तुति यानी तारीफ और निंदा दोनों को त्याग दो, मान अभिमान छोड़ दो। ऐसे मुकम्मल इंसान (पूर्ण पुरुष) बनो।

अब ज़रा नज़र मार कर देखो, हम क्या करते हैं। किसी के पास जा बैठो, किसी न किसी की निंदा करेगा या जिस से उस की बनी होगी तारीफ करेगा और दूसरे की बुराई। किसी के पास चुपचाप बैठ कर उस की बातें सुनो। उन बातों में 99 फीसदी (प्रतिशत) स्तुति होगी या निंदा, वही धड़ेबंदी की बातें। भला पूछो उन से कि इस में तुम्हें क्या मिलता है? निंदा करने वाले Unpaid Apprentices ~~in~~ of the C.I.D. of God. (परमात्मा की सी.आई.डी के बेतन्खाह के नौकर) हैं। मान लो कोई बुरा है तो निंदा करने वाले के अंदर बुराई का ज़हर सिर से पैर तक चढ़ जाएगा, इस की सज़ा ज़रूर मिलेगी। यह कुदरत का कानून है और अटल है। It is the inexorable law of karmas. जैसा ख्याल हो उस का असर भी वैसा ही होगा। आज कल क्या हो रहा है? घर-घर की, पार्टी पार्टी की, कौम-कौम की और मठों में बैठे साधु तक दूसरे साधुओं की निंदा करते हैं। उन के प्रचारों में खुल्लम-खुल्ला एक दूसरे को बुरा भला कहा जाता है। अगर हम कोई खास जमात या पार्टी बनाकर उस पार्टी या जमात का भला सोचेंगे तो कुदरती तौर पुर दूसरों की बुराई होगी। यह कुदरत का असूल है। हम क्या करते हैं? एक सोसाइटी बना ली और सोचते हैं कि यह सोसाइटी बढ़े, फूले फले। यह बढ़ेगी तो दूसरों का कुदरती तौर पर नुकसान होगा। महात्मा किसी जमात से बंधे नहीं होते, वे तो मनुष्य मात्र का भला चाहते हैं:

नानक नाम चढ़दी कला।। तेरे भाणे सरबत्त का भला।।

तो पहली बात यह है कि आदमी निंदा या धड़ेबंदी में न पड़े, जो सच है वह सच है। काने को काना कहने की बजाय अगर यह कहा जाए कि मालिक की रज़ा आप की नज़र नहीं, ईश्वर बहाल (ठीक) करे, तो बात वही है पर किसी को ठेस नहीं लगती। ऐसी हालत महज (केवल) ज़ाहिरी नहीं बल्कि अंतर की भी होना चाहिए। आदर्श इंसान वह है जो न निंदा में है न धड़ेबंदी में। अगर निंदा करोगे तो जिस का चिंतन करोगे उसका रूप बनोगे। As you think so you become, आप कहते हैं फलां (अमुक) आदमी बुरा है। यह Negative way (उलटा तरीका) है। इस का आप पर असर पड़ता है। Temperance (नशेबाज़ी के विरोधी) वालों ही की मिसाल (उदाहरण) लो। तुम देखोगे उन में अकसर (बहुधा) शराब पीते हैं। वे क्या करें। हर वक्त उन की ज़बान का ज़िक्र है कि शराब बुरी चीज़ है, शराब मत पियो। इस तरह Negative way में ज़िक्र करने से उन के मन पर इस का असर पड़ता है।

जापान की मिसाल है। ईसाई मिशनरी प्रचार के लिए वहां गए और लोगों को उपदेश दिया, Thou shalt not strike a woman (अर्थात् औरत को मत मारो)। इससे पहले वहां लोग बड़े आराम से ज़िंदगी बसर करते थे और कोई भी औरत पर हाथ नहीं उठाता था। वे (जापानी) हैरान होकर पूछने लगे, "क्या आप के यहां औरतों को मारते भी हैं?" नतीज़ा इस प्रचार का यह हुआ कि साल भर बाद वहां भी लोग औरत को मारने लगे। कहीं लिखा हो कि इसे मत पढ़ो तो हम ज़रूर उसे पढ़ते हैं। यह मन का खासा (स्वभाव, प्रकृति) है। जहां से इसे मोड़ो, यह वहीं बढ़ता है। संतों का प्रचार Negative way (नकारात्मक) में नहीं होता। वे यह नहीं कहते कि झूठ मत बोलो, वे कहते हैं हमेशा सच बोलो।

निंदा भी एक तरह का सुमिरन है। जिसका सुमिरन करोगे वैसे ही बन जाओगे। कीचड़ में पत्थर मारो तो अपने ऊपर ही छींटें पड़ेंगे। नाली का गंदा पानी निकाल कर बाहर फेंक दिया जाए तो उस से गंदगी और बदबू बढ़ेगी या कम होगी? अगर धीरे-धीरे पानी बहाओगे तो मैल कम हो जाएगा और बदबू भी नहीं रहेगी। अगर कहीं बुराई हो तो बुराई करने

वाले से नफ़रत नहीं होनी चाहिए। पाप से नफ़रत करो लेकिन पापी से प्यार करो। Hate the sin but love the sinner. बच्चा गंदा हो तो माँ उसे धो-धाकर गोद में उठा लेती है। बच्चे को वह कुछ नहीं कहती। Constructive way (रचनात्मक) में काम करो तब तो बच जाओगे। न निंदा करो न धड़ेबंदी। तुम देखोगे तुम्हारा कितना वक्त बच जाएगा। दिन में बारह घंटे होते हैं। इन बारह घंटों में आठ दस घंटे यही काम होता है। किसी की निंदा किसी की तारीफ।

निंदा भली किसे की नाहीं, मनमुख मुगध करंन॥
मुंह काले तिन्हां निंदकां, नरके घोर पवंन॥

अगर कहीं कोई गलतफ़हमी पैदा हो गई है तो जाओ जाकर अपनी आँख से देखो, खुद असलियत मालूम करो। कोई निंदा करे तो उस की बात का सोलह आने यकीन न करो, उस का कहा कुरान की आयत नहीं।

हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) के पास एक मुसलमान ब्यास में आया। हज़ूर उस वक्त सत्संग कर रहे थे। सत्संग खत्म हुआ तो वह खड़ा हो गया और पांच मिनट बोलने की इजाज़त मांगी। माइक्रोफोन उठा कर उस के सामने रख दिया गया। वह कहने लगा, "तीन चार साल की बात है मैं यहां आया था। मुझे अंतर के अभ्यास में कुछ मुश्किल थी और वह अंतर का मामला ऐसा है कि इसे सुलझाना किसी कामिल (अनुभवी) का काम है। आमिल (विद्वान) का काम नहीं। मैं ब्यास के स्टेशन पर उतरा और किसी से पूछा कि यहां कोई कामिल (पूर्ण) फकीर रहता है? उस आदमी ने जवाब दिया, 'यहां किधर आए हो। यहां कोई फ़कीर-वकीर नहीं रहता और हज़ूर की शान में वह ज़हर उगला और ऐसी ऊल-जलूल बातें कीं कि मेरा दिल खट्टा हो गया और मैं उसी गाड़ी पर सवार हो कर वापस चला गया।" यह कहानी सुनाने के बाद वह बोला, "आज मैं इस बात को रोता हूं कि क्यों मैंने महज़ (केवल) सुनी-सुनाई बातों पर यकीन कर लिया। अगर मैं सुनी-सुनाई बात पर यकीन न करता तो आज चार साल पीछे न रहता और यह फ़ैज़ (परमार्थ का लाभ) जो मुझे आज हासिल हुआ है चार साल पहले नसीब हो जाता और आज तक मैं कितनी ही और तरक्की कर लेता।"

जब लग न देखूं अपनी नैनी।
तब लग न पतीजूं गुरु की बैनी॥

गुरु जो बतलाए तजरबे के तौर पर उसे कबूल कर लो मगर जब तक अंतर में तजरबा न होगा पूरा यकीन नहीं होगा। किसी चीज़ को बढ़ा चढ़ा कर ब्यान करना, 100 को 500 ब्यान करना, वह भी निंदा और धड़ेबंदी में शामिल है। सो न किसी की निंदा करो न स्तुति। कोई निंदा या स्तुति करे तो उसे सुनो भी मत। अगर सुनते-सुनते मन में संस्कार बैठ जाएगा तो बह जाओगे। अव्वल ऐसी बातें सुनो ही नहीं। अगर सुनो भी तो सोलह आने सच न मानो। ऐसी अवस्था अंतर की बना लो। न किसी की बुराई न तारीफ न निंदा करो न स्तुति।

दूसरी बात है अंतर में मान बड़ाई। मैं बड़ा आलम (विद्वान) हूं, मैं बड़ा धनवान हूं, जो चाहे कर सकता हुं, यह अंहकार की भावना परमात्मा को पाने के रास्ते में भारी रुकावट है।

प्रभु जी हंकार न भावई॥

सेंट आगस्टिन एक महात्मा हुए हैं। उन्होंने परमार्थ के लिए तीन चीज़ें ज़रूरी बताई हैं। पूछा वे तीन चीज़े क्या हैं? कहने लगे, "First Humility, Second Humility और Third Humility (पहले नम्रता, दूसरे फिर नम्रता, तीसरे फिर नम्रता)। जिस के अंदर मान बड़ाई का ख्याल हो वह अव्वल तो महात्मा के पास जाएगा ही नहीं। इंसान गलती कर सकता है, मनुष्य भूलन हार है। अगर कोई गलती है तो वह दूर हो जाएगी और अगर सीधे रास्ते पर है तो इस में अंहकार काहे का है। इंसान के अंदर दौलत का या इल्म (विद्या) का कोई अभिमान नहीं होना चाहिए, ऐसे इंसान बनो, नारमल इंसान, वरना इन्सानियम (मनुष्यत्व) के दर्जे से नीचे गिर जाओगे। अगर किसी की निंदा सुनो तो उस पर यकीन कर के बैठ जाओ, उस की ओर प्यार से ख्याल भेजो, दूसरे मन में अंहकार न आने दो। इंसान इंसान में क्या फ़र्क है? फर्ज करो एक पहली जमात (कक्षा) में है दूसरा एम.ए. पास है, जो आज एम.ए. है चौदह पन्द्रह साल पहले वह भी तो पहली जमात में था? दिल में ज़ोम (अभिमान) भरा हो तो ठंडे दिल से इंसान कोई बात सोच नहीं सकता। ज़रूरत इस बात की

है कि बाहोश (होश में) रहो। हम देखते हैं कि कोई न कोई ज़ोम (अभिमान) दिल में भरा रहता है। ऐसी हालत में सीधी बात भी कहो तो उलटी लगती है। कबीर साहब ने यहां इंसान का आदर्श पेश किया है कि उसे कैसा होना चाहिए। उस में नम्रता होना चाहिए। नम्रता होगी तभी वह किसी आमिल फ़क़ीर के पास तबादला-ए-खयालात (विचार-विमर्श) के लिए जाएगा। अगर कोई मुश्किल पेश आएगी तो उस से मिल कर हल करा लेगा। नम्रता संतों का श्रृंगार है। फलदार दरख्त की शाखें (टहनियां) हमेशा झुकी रहती हैं। संतपने की पहली निशानी है नम्रता। सो पहली चीज़ जो परमार्थ में ज़रूरी है वह नम्रता है।

Second Humility दूसरी चीज़ फिर नम्रता है। फ़र्ज करो कि रास्ता भी मिल गया। अव्वल तो अभिमानी का इस राह पर आना ही मुश्किल है लेकिन आ कर फिर भी ज़ोम (अभिमान) में रहा तो खाली हाथ रह जाएगा। महात्मा से कुछ पाने के लिए भी नम्रता की ज़रूरत है। अगर कुछ मिल गया तो और खुशी होगी, न भी मिला तो मुश्किल तो हल हो ही जाएगी।

Third Humility तीसरी चीज़ फिर नम्रता है। परमार्थ की प्राप्ति भी हो गई तब भी नम्रता ज़रूरी है। जहां अहंकार होगा वहां काल और माया गिरा देंगे। ऐसी अवस्था नम्रता से अंतर मन की हो जाए तो कितनी शांति, कितना टिकाव नसीब होगा।

(2) लोहा कंचन सम कर जाने, ते मूरत भगवाना॥

लोहा हो या सोना, दोनों से कोई गर्ज़ न रखो। कोई दे, न दे इस की कोई परवाह न करे। दादू साहब कहते हैं, "कोई ऐसा साधु लाओ जिसे कंचन और स्त्री मिले और उस ने हाथ न पसारा हो" कनक और कामिनी, ये दो ज़बरदस्त फिसलने वाली घाटियां हैं। अंतर मन में कंचन और लोहा एक बराबर जाने, बाहर ज़बानी जमा खर्च न हो। बाहर से तो कह दिया कि हमें इन चीज़ों से कोई सरोकार (मतलब) नहीं लेकिन मन के अंतर धन समेटने की धुन हो तो काम नहीं बनेगा। ऐसा इंसान भगवान की मूरत है जिस के मन में उतार चढ़ाव की लहरें नही। उस में अंतर का Reflection (अक्स) होगा। थोड़े लफ़्ज़ों में कबीर साहब ने आदर्श मनुष्य का यह बाहरी नक्शा खैंचा है।

(3) तेरा जन एक आध कोई, तेरा जन इक आध कोई॥

अब फरमाते हैं हे मालिक! तेरा सच्चा आशिक (प्रेमी) लाखों में, करोड़ों में कोई एक आध ही होगा। भगवान कृष्ण ने भी यही बात कही है कि हे अर्जुन! हज़ारों में से कोई एक ऐसा होता है जो मेरी तरफ चलता है और उन हज़ारों में से जो मेरी तरफ चल रहे हैं कोई एक-आध ऐसा निकलता है जो मुझ तक पहुंचता है।

लाखन में कोई है नहीं, कोटिन में कोई एक॥

हम मंदिरों, गुरद्वारों, मस्जिदों में जाते हैं। हम में से कितने हैं जो परमात्मा को पाने के लिए वहां जाते हैं? हम इस लिए वहां जाते हैं कि हमारा रोज़गार बना रहे, हमारे बाल-बच्चे राज़ी रहें। हमारी पूजा पाठ में भी कोई न कोई दुनियावी (सांसारिक) गर्ज़ छुपी होती है। कोई एक-आध ऐसा होता है जो बेगर्ज़ (निष्काम) हो कर परमात्मा की भक्ति करता है। जो भक्त निष्काम मन से और केवल परमार्थ को पाने के लिए पूजा पाठ करता है, चाहे वह किसी दायरे में हो, वह ज़रूर भगवान तक पहुंचेगा। बच्चा रोये तो माता उसे झट छाती से लगा लेती है। परमात्मा तो सर्वव्यापक है। क्या वह हमारी आवाज़ हमारी पुकार न सुनेगा?

एक बच्चे की मिसाल है। उस ने अंदर कमरे में उठना चाहा। दीवार का सहारा लिया, वहां से फिसल कर गिरा, कुर्सी को पकड़ा तो मुंह के बल गिरा, कपड़ा पकड़ा तो फिर भी गिरा। लाचार हो कर पुकारा, "हाय माँ"। माँ उस वक्त रसोई में थी, बच्चे की पुकार सुन कर उबलता हुआ दूध छोड़ कर उठ दौड़ी और बच्चे को उठा कर छाती से लगा लिया। बच्चे ने पूछा, "मां मैं तुझे बहुत प्यारा हूं?" माँ बोली, "हाँ बेटा।" बच्चे ने सोचा कि माँ ने मेरी पुकार के आगे दूध की भी परवाह नहीं की, अब क्या है, जब चाहेंगे माँ को बुला लेंगे। दूसरे दिन उस ने फिर पुकारा, "हाय माँ", लेकिन माँ नहीं आई। उसे चीखते-चिल्लाते आधा घंटा हो गया लेकिन माँ नहीं आई। बच्चा खिसकता हुआ रसोई में जा पहुंचा और माँ से पूछने लगा, "आज क्या पका रही हो?" माँ बोली, "दाल।" बच्चा बोला, "तुम झूठ कहती हो। कोई बड़ी कीमती चीज़ होगी पतीले में। उस दिन तो दूध उबलता छोड़ कर मेरे बुलाने पर झट चली आई थी, आज

दाल छोड़ कर भी नहीं आई और पुकारते पुकारते मेरा गला भी बैठ गया।'' माँ ने जवाब दिया,''बेटा उस रोज़ तेरी पुकार में जो दर्द था, वह आज नहीं था।'' सो अगर सच्ची तड़प हो तो परमात्मा ज़रूर सुनेगा। वह तो हमारी आत्मा की आत्मा है। आज कोई सच्ची तड़प से उसे पुकारे तो वह आज ही सामने आ जाएगा। वह तो हृदय को देखता है। यह कबीर साहब फरमाते हैं, मैं नहीं कह रहा। यह कबीर का कलाम (वाणी) है कि तेरा सच्चा आशिक, हे मालिक, कोई एक आध ही दुनिया में मिलेगा। जो परमात्मा को चाहते हैं उन्हें वह ज़रूर मिलेगा, वह खुद सामान पैदा कर देगा, अगर कोई मूर्ति पूजक है तो भी कोई परवाह नहीं। हृदय में परमात्मा को पाने की सच्ची तड़प है तो वह ज़रूर सामान कर देगा। वह क्या करेगा? किसी मिले हुए को मिला देगा।

कोई जन हर स्यों देवे जोड़॥

सो कहते हैं कि तेरा सेवक कोई एक आध ही है वह भी कहीं कहीं मिलता है। जिसे ऐसा सेवक परमात्मा का मिल जाए उस की भारी खुश-किस्मती है। बिजली का स्विच जो पावर हाऊस (बिजली घर) से जुड़ा हुआ है, वह आप के सारे काम करेगा, रोशनी भी देगा, पंखा भी चलाएगा मगर उस का कनेक्शन पावर हाऊस से होना चाहिए। वैसे बिजली तो हर जगह परिपूर्ण है लेकिन उस से हमारा कोई काम नहीं बनता। उस से काम तभी ले सकते हैं जब पावर हाऊस से जुड़ा हुआ स्विच हमारे हाथ में हो। इसी तरह परमात्मा हर जगह परिपूर्ण है लेकिन उस से मिलने के लिए किसी ऐसे के पास जाना होगा जो परमात्मा से मिला हुआ हो।

(4) काम क्रोध लोभ मोह बिबरजित, हर पद चीन्हे सोई॥

कबीर साहब ने यहां सदाचार और नेक पाक ज़िंदगी का जो आदर्श है उस का फोटो पेश किया है। जब तक जीवन पवित्र न हो, परमात्मा नहीं मिलेगा, नहीं मिलेगा। अब तक जो कर चुके सो कर चुके। जो हुआ सो हुआ। अब आगे बस कर दो। Do no more.

यसू मसीह को उन के एक तालिब (शिष्य) साईमन ने दावत का बुलावा भेजा (निमन्त्रित किया), वे गए। साईमन और उस के दोस्त बैठे हुए थे। एक वेश्या को मालूम हुआ कि महात्मा साईमन के घर आए

हुए हैं। मुक्ति की ख्वाहिश (इच्छा) पापी इंसान के अंदर भी होती है। वेश्या वहां पहुंची और महफिल (सभा) में चारों तरफ नज़र डाली। हज़ारों में एक ही निराली सूरत उसे नज़र आई। वह वहां गई और मसीह के पैरों पर सिर रख दिया और ज़ार-ज़ार (फूट-फूट कर) रोने लगी, इतना रोई कि मसीह के पावं भीग गए। उस के बाल खुले थे। अपने बालों से मसीह के गीले पांव पोछने लगी। मसीह को दया आई। उस के सिर पर हाथ रख दिया। यह देख कर साईमन के मन में अभाव आ गया। सोचने लगा, खूब महात्मा है जिस की दोस्ती एक वेश्या से है। हम अपने ज़ाविया निगाह (दृष्टिकोण) से दूसरे को देखते है। जो कामी है उसे दूसरा भी कामी दिखाई देता है। महात्मा तो मन इंद्रियों से ऊपर है। अगर वह मन इंद्रियों से ऊपर नहीं तो वह महात्मा नहीं। मसीह ने देखा कि साईमन डोल गया है, इसे बाद में भी संभालना होगा, अभी क्यों न संभाला जाए। वे बोले, ''साईमन !'' वह अकड़ कर बोला, ''हाँ।'' मसीह ने कहा,'' अगर किसी आदमी को एक से पांच सौ रुपए लेने हैं और किसी दूसरे से एक हज़ार रूपए, और लेने वाला दोनों को बख्श (माफ़) दे तो बताओ उस ने ज़्यादा बख्शिश किस पर की?'' साईमन ने मन में सोचा कि महात्मा कितना चालाक है। बोला, ''जिस के हज़ार रूपए लेने वाले ने बख्शे हैं; उस पर ज़्यादा बख्शिश की।'' मसीह ने कहा, ''मैं आया, तुम ने मेरे पांव नहीं धोए। इस वेश्या ने बड़े-बड़े पाप किए हैं लेकिन इस ने अपने पापों को निदामत (पश्चाताप) के आसुंओं से धो दिया है।'' फिर वेश्या से कहा, "Madam !I forgive thee, for thou hast loved much. Do no more."

यह महात्मा का पहला उपदेश है। वह कहता है जो हो चुका सो हो चुका। अब आगे के लिए तौबा कर लो। Do no more. धोबी के पास तेली, हलवाई वगैरह सभी के कपड़े आते हैं। क्या वह कभी इंकार करता है लेने से? वह जानता है कि इन कपड़ों में सफेदी है। एक भट्टी नहीं तो दो भट्टी चढ़ा कर निकाल लूंगा। इसी तरह महात्मा के पास लोग आते हैं। वह देखता है ये बेचारे इंद्रियों के घाट पर फंसे हुए हैं। महात्मा के पास युक्ति है उन्हें इंद्रियों के ऊपर उठने की। वह जानता

है मैं इन्हें निकाल लूंगा। उसे अपनी समर्था पर भरोसा है, इस लिए कोई पापी उस के पास आए वह न नहीं करता। श्री गुरु अर्जुन साहब को बादशाह ने लिखा कि आपकी संगत में डाकू हैं। मसलन (उदाहणार्थ) विधिचन्द डाकू था। उन्होंने जवाब में लिख दिया, "ये लोग पहले कभी डाकू होंगे, अब तो सब महात्मा हैं।" यह जितनी भी आलाइशें (मलीनताएं) हैं सब इंद्रियों के घाट की हैं। इंद्रियों के घाट से ऊपर आ गए तो आलाइशें (मैलें) कहां रहें? महात्मा पहले दिन हमें इंद्रियों के घाट से ऊपर लाकर अन्तर्मुख नाम से जोड़ देता है।

तो कहते हैं कि परमात्मा को पाने के लिए पहली ज़रूरी चीज़ यह है कि जीवन नेक पाक हो। Blessed are the pure in heart for they shall see God. मुबारिक हैं वे लोग जिन का मन पवित्र है। केवल ऐसे ही लोग परमात्मा को पा सकते हैं।

गर्ज़ ऐसा इंसान जिस का ऊपर ज़िक्र आया है, जो न किसी की स्तुति में है न निंदा में, जिस के मन में मान और अभिमान का ख्याल न हो, जो सोने और लोहे को एक जैसा जाने, जो बेगर्ज़ और निष्काम हो, वह इस रास्ते में कामयाब होगा।

अब काम क्या है?

जेती मन की कलपना काम कहावे सोए॥

जितनी भी मन की कलपनाएं (इच्छाएं) हैं, ये सब काम हैं। काम में रूह गिरती है।

जहां काम तहां नाम नहीं, जहां नाम नहीं काम।
दोई इक जा न रहें, रवि रजनी इक ठाम॥

नाम का ताल्लुक (संबंध) इंद्रियों के घाट से ऊपर आ कर मिलता है। काम में रूह नीचे गिरती है। दोनों का मेल ही क्या?

अब जहां काम है वहां क्रोध रहेगा, काम से क्रोध पैदा होता है। ख्वाहिश (इच्छा) में रुकावट पैदा हुई और क्रोध आया। पानी का नाला बह रहा हो, रास्ते में पत्थर रख दो तो पानी की टक्कर से झाग और आवाज़ पैदा होगी। काम चेष्टा मन में हो और पता लगे कि कोई रुकावट डालने वाले हैं तो गुस्सा आता है। आवाज़ ज़ोर से निकलती है और मुंह से झाग भी पैदा होती है। मन चाही चीज़ मिल जाए तो उसे गले लगा लेता है

कि यह मेरी चीज़ है। इसी दौड़ धूप में सारी उम्र गुज़र जाती है।

जिस के अंतर में नम्रता भाव है, जो सोने और लोहे को बराबर जानता है, ऐसा Normal (बाहोश) इंसान जिस के मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह के वेग न चलें, केवल ऐसा मनुष्य ही परमात्मा को पाता है। इस रास्ते में पहली चीज़ है नेक पाक ज़िंदगी, सदाचार का जीवन। हर शरीयत (समाज) की गर्ज़ (उद्देश्य) यही है कि नेक पाक जीवन बसर (व्यतीत) करते हुए अपने आप को जाने और परमात्मा को मिलने का यत्न करे। यह Qualification (गुण) है परमार्थ की प्राप्ति के लिए। रोज़ अपने जीवन की पड़ताल करो। जीवन साफ़ हो गया तो अपने अंदर पवित्रता और ठंडक महसूस (प्रतीत) होगी। दुनिया में नेक पाक जीवन वाले दुर्लभ हैं। आज कोई नेक पाक जीवन वाला इंसान मिले तो दुनिया उसके आगे सिर रख देगी। आज कल Acting, Posing (ढोंग, दिखावा) बहुत है। ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने इन्सानियत (मनुष्यत्व) का जो आदर्श पेश किया है, ऐसा इंसान मिले सही, दुनिया उसके आगे सिर रख देगी।

(5) रज गुण, तम गुण, सत गुण कहिए, एह तेरी सब माया॥

(6) चौथे पद को जो नर चीन्हें, तिन ही परम पद पाया॥

फरमाते हैं, हे प्रभु। सारी दुनिया या तो तमोगुण में है, या रजोगुण में या सतोगुण के दायरे में। जीवन नेक पाक हो तो यह सतोगुण है लेकिन यह Ideal (मंज़िल) नहीं। इस से भी ऊपर आना है हमें। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि "नेक कर्म और बद कर्म जीव को बांधने के लिए दोनों एक समान हैं, जैसे कि बेड़ी (हथकड़ी) लोहे की हो या सोने की, दोनों बांध देती हैं।" हमने तो निःकर्म होना है। यह जो त्रिगुणात्मक अंडा है, इस के ऊपर आना है हमें। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को यही उपदेश दिया कि हे अर्जुन, तीन गुणों से ऊपर चौथे पद में आ। जो उसके पास आएंगे उन्हें परम पद मिलेगा। तीन गुणों में सतोगुण अच्छा है लेकिन इस से भी ऊपर आ जाओ।

सो परमार्थ को पाने के रास्ते में पहली ज़रूरत इस बात की है कि न धड़ेबंदी में हो, न निंदा में और फिर मान अभिमान न हो न जाति का, न इल्म का, न दौलत का, कोई ग़रूर (अभिमान) न हो, साथ ही

मन में लब लालच (लोभ) भी न हो। कहते हैं ऐसा आदमी भगवान की सूरत होता है। फिर फरमाते हैं कि मालिक का सच्चा आशिक लाखों करोड़ों में कोई एक आध ही होता है। जो कुछ भी करो, परमात्मा के लिए करो वह आप का बन गया तो सब आप के बन गए।

एक बादशाह ने मीना बाज़ार लगाया जिसमें तरह तरह की चीज़ों को सजा कर रखा हुआ था। उस मीना बाज़ार में हर आने वाले को इजाज़त थी कि भरे बाज़ार में एक बार जिस चीज़ को हाथ लगाए, वह चीज़ उस की हो गई। सब ने अपनी अपनी मन पंसद चीज़ को हाथ लगाया और वह चीज़ हासिल कर ली। एक लड़की, अंदर से सयानी मगर ज़ाहिरा पगली बाज़ार में फिरती रही लेकिन उस ने किसी चीज़ को हाथ नहीं लगाया। वक्त गुज़रता गया, लोगों ने समझाया, "अरी पगली! शाम होने को है, फिर वक्त नहीं रहेगा, जो कुछ तुझे लेना है हाथ लगा कर ले ले।" मगर वह लड़की अपनी धुन में आगे बढ़ती चली गई और बादशाह के करीब जा पहुंची। बादशाह देख रहा था, वह सोच रहा था कि मेरी चीज़ों के तो सब ग्राहक हैं लेकिन जिस की यह सब चीज़ें हैं उस की कोई परवाह ही नहीं। लड़की को अपनी तरफ आता देख कर खुश हुआ कि इतनी भीड़ में एक तो ऐसा निकला जो मेरा तलबगार (इच्छुक) है लेकिन ज़ाहिर (बाहर से) बोला, "नादान लड़की, इस तरफ क्या चली आ रही है, बाज़ार तो उस तरफ़ है।" लड़की ने कहा, "यह मीना बाज़ार किसका है?" बादशाह बोला, "मेरा।" लड़की ने बादशाह के सिर पर हाथ रख दिया और बोली, "अब तू किस का है?" बादशाह बोला, "मैं तेरा हूं।" लड़की ने कहा, "जब तू मेरा हो गया तो यह मीना बाज़ार और इसकी सारी चीज़ें भी मेरी हो गईं।"

सच तो यह है कि परमात्मा को चाहने वाला कहीं कहीं मिलता है। हमारी यह हालत है कि:

दात पियारी बिस्सरेया दातार।

ज़रा ग़ौर कीजिए कि हम चाहते क्या हैं? हमें यह मालूम नहीं कि हम कौन हैं और चाहते क्या हैं। हमारी ज़िंदगी ज़ाहिरदारी की ज़िंदगी है। हम Self deception (खुद के धोखे) में फंसे हुए अपने आप को

धोखा दे रहे हैं। संत महात्मा आ कर हमें जगाते हैं। इंद्रियों से ऊपर आने का थोड़ा तजरबा कराते हैं तो हमें कुछ होश आती है। पानी हिलता हो और उसमें लहरें उठ रही हों तो अक्स (प्रतिबिंब) नज़र नहीं आता। यह हाल मन का है। मन में काम, क्रोध, अहंकार, स्तुति, निंदा की लहरें उठ रही हों तो चेहरा कैसे नज़र आए। जब तक रोज़ अपने अंदर की पड़ताल करके, Self-introspection (जीवन की पड़ताल) अपने मन के शीशे को साफ कर और फिर किसी आमिल (अनुभवी) के पास जा कर रास्ता न लें, परमात्मा को पाने का मामला, "हनोज़ दिल्ली दूरस्त" (दिल्ली अभी दूर है) का मज़मून है।

(7) तीरथ बरत नेम सुच संजम, सदा रहे निहकामा॥

(8) तृष्णा अरु माया भ्रम चूका, चितवत आतम रामा॥

हम दुनिया में जो व्यवहार करते हैं, जो साधन करते हैं, वे सब क्या हैं? दरियाओं, तीर्थों वगैरह के भ्रमण और व्रतों वगैरह नियमों और संयमों से जो हम करते हैं, निष्कामता नहीं आती। तीर्थ-व्रत के साथ ही यह भावना रहती है कि "मैं करता हूं", और अंहकार बढ़ जाता है। तीर्थ क्या हैं? जहां कोई वली अवतार हुआ, जहां किसी आमिल महात्मा ने अभ्यास किया और परमात्मा से जुड़ा वह जगह तीर्थ बन गई। वह जगह महात्मा का यादगार तो रहेगी लेकिन वह हालत, वह अवस्था वहां जा कर ही नहीं हो जाएगी, जो महात्मा ने वहां अभ्यास करके हासिल की। जहां महात्मा बैठे वह जगह तीर्थ बन गई। ये तीर्थस्थान, महापुरुषों की ये यादगारें मुबारिक हैं, इन्हें रखो लेकिन जिस चीज़ के कारण वह यादगार बना उसे भी तो हासिल करो। वह चीज़ है नाम की कमाई। आज तीर्थ सैर तफरीह और खाने पीने के ठिकाने बन गए हैं। हम व्रत किस लिए रखते हैं? पेट जितना खाली हो वह खुदा के नूर से भर जाएगा। इस लिए इंसान को चाहिए कि बस थोड़ा खाए। हम रोटी खाते नहीं तुड़ते (ठोंसते) हैं। सेर भर पेड़े खा लिए, दो चार सेर दूध पी लिया। नतीजा यह होता है कि मेदा (पेट) साफ़ नहीं रहता। खुराक पेट में सड़ने से अफूनत (दुर्गंध) पैदा होती है और दिमाग में उस के बुखारात (धांस) पहुंचते हैं, ऐसी हालत में भजन सुमिरन में क्या दिल लगेगा?

हज़रत मुहम्मद साहब ने रोज़े रखाए। रोज़े इस लिए रखाए कि

जफाकशी (तप) और सयर (धैर्य) का सबक मिले। फालतू ग़िज़ा Foreign metter मेदे से खारिज (निकलती) होती रहे और सेहत (स्वास्थ्य) बनी रहे। अब तुम देखोगे कि जितनी बीमारियां हैं, इन में अक्सर (अधिकांश) ज़्यादा खाने के सबब से होती हैं। लोगों ने व्रत का दस्तूर (नियम) बना लिया है। पंडित से कहते हैं कि मेरी जगह तुम व्रत रख लो, यह ऐसे ही है जैसे कोई तालिबे इल्म (विद्यार्थी) उस्ताद से कह दे कि मेरे हिस्से का तू पढ़ लिया कर। क्या वह लड़का पास हो जाएगा या कुछ सीख जाएगा? नहाना, धोना ठीक है, खूब नहाओ, धोओ मगर खाली नहाने धोने से कुछ नहीं होगा।

जल के मज्जन जे गत होवे, नित्त नित्त मेंडक न्हावे॥

अंतर की पवित्रता भी ज़रूरी है। मन में काम, क्रोध के वेग चल रहे हों, सिर से पैर तक बुरी भावनाएँ और दूसरों का बुरा चितवन करने का ज़हर भरा है फिर उस पर अभिमान और अंहकार। बाहर से सुच्चा हो भी तो क्या सुच्चताई हुई। जब तक निष्काम न हो, परमात्मा का रास्ता नहीं मिलता। कर्म करो, मगर निःकर्म हो कर। कम खाओ। कभी कभी फ़ाका (व्रत) रख लो, उस रोज़ भजन सुमिरन करो ताकि अंतर की सफ़ाई और सुच्चता हो, फिर हौमैं (अंहकार) का कांटा नहीं चुभेगा।

अब कबीर साहब फरमाते हैं कि तीन गुणों की जो माया है उस से आज़ादी चाहते हो तो एक बात सुन लो। माया, भ्रम, तृष्णा, तभी खत्म होगी जब तुम आत्मा को चीन्होगे (जब इंद्रियों से ऊपर आने का तज़रबा कर लोगे) तो माया के दायरे से अलग हो जाओगे। अब हम इंद्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बने बैठे हैं। इस के ऊपर आ कर, ''आतम तीर्थ करे निवास।'' आगे नाम है जिस से जुड़ कर परमात्मा से मिल जाओगे।

महात्मा क्या कहता है जीव को? कि भई अब तक जो हुआ सो हुआ। आगे से जीवन नेक पाक रखो। रोज़ इंद्रियों से ऊपर आने का साधन करो, इंद्रियों के घाट से जो आलायशें आती हैं वे नहीं लगेंगी, पिछली मैल नाम के प्रताप से धुल जाएगी। महात्मा युक्ति देते हैं पिंड से ऊपर आने की, बाहर से लाताल्लुक (निर्लेप) करने के लिए अंतर में नाम का ताल्लुक देते हैं। ये दो साधन हैं जिन से आने जाने की यानी

बार बार जन्म-मरण के दुख की जड़ कट जाएगी। फिर न आना है न जाना।

(9) जिह मंदिर दीपक प्रगासेया, अंधकार तह नासा॥

(10) निरभौ पूर रहे भ्रम भागा, कहे कबीर जन दासा॥

जो ऐसा करेंगे, आत्मा को पिंड से ऊपर ला कर नाम से लगेंगे, उनके अंदर प्रकाश होगा, पूर्ण ज्योति जागेगी।

पूर्ण जोत जगे घट में, ताहिं खालस ताहिं नखालस जानो॥

और कहा है:

दीवा बले अथक।

उल्टा कुआँ गगन में तिस में जले चिराग।

"If thine eyes be single thy whole being shall be full of light." (अगर तुम्हारी दो से एक आंख बन जाए तो तुम्हारी आत्मा में प्रकाश भर जाएगा।) जगह जगह महात्माओं ने अपनी अपनी बोली में इस का इशारा दिया है मगर बात सब एक ही कहते हैं। अगर आत्मराम को चीन्हने की इच्छा है तो किसी आमिल (अनुभवी पुरुष) के पास जाओ, वहां जा कर अविद्या का अंधेरा दूर होगा। माया और इंद्रियों से ऊपर, पिंड और ब्रह्मांड के पास पहुंच कर प्रभु में जाग उठोगे। इस वक्त तो हम अंधकार में सो रहे हैं।

माया मोह सबै जग सोया, एह भरम कहो कस जाई॥

''ख़ुफ़तारा ख़ुफ़ता कै कुनद बेदार'' अर्थात् सोया हुआ सोए हुए को कैसे जगा सकता है? जिसका अपना भ्रम नहीं टूटा वह दूसरे का भ्रम कैसे दूर करेगा? और यहां तो सब अविद्या के अंधेरे में पड़े सो रहे हैं। तो फ़रमाते हैं, जिसे वह अवस्था हासिल हो गई, जो माया और इंद्रियों से ऊपर, पिंड, अंड और ब्रह्मांड के पार जा कर अविद्या की नींद से जाग उठा, उसे हर जगह, अंदर भी और बाहर भी, मालिक परिपूर्ण नज़र आएगा।

एह संसार जो तू वेखदा हर का रूप है।

हर रूप नदरी आया॥

तो कबीर साहब फ़रमाते हैं कि ऐसों के हम दास हैं जिन्हें यह गति मिल गई है। यहां (शब्द) 'जन दास' आया है। यहां हिंदू, मुस्लिम, सिख,

ईसाई (जाति) या मज़हब (धर्म) से ताल्लुक नहीं रखते हैं, हम उन्हें नमस्कार करते हैं। उनका उपदेश सारी इंसानी बरादरी (समस्त मानव समाज) के लिये है।

"महापुरख साखी बोलदे साँझी सकल जहाने।"

(11) री कलवार गंवार मूढ़ मत, उलटो पवन फिराव।
मन मतवार मेर सर भाठी, अमृत धार चुवाओ॥

(12) बोलो भैया राम की दुहाई, बोलो भैया राम की दुहाई॥
पीवो संत सदा मत दुर्लभ, सहजे प्यास बुझाई॥

अब उपदेश देते हैं कि ऐ नशेबाज़ आत्मा, तू दुनिया के नशे में चूर है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार के नशे में तू चूर है। तू तीन गुणों में लंपट हो रही है। तुझे अपनी भी होश नहीं रही। आसा और मनसा की लहरें तेरे आस पास उठ रही हैं, उन्हें रोक। एक तो नशा फिर उस पर और पैग पर पैग चढ़ाए जाना, यह नशा दूर कैसे होगा। किसी आमिल के पास जाकर, अब और नशा चढ़ाना बंद कर दे। तेरे अंदर अमृत की भट्ठी लगी है जिस से अमृत रस पैदा होता है। वह ऐसी शराब है जिस का नशा कभी नहीं टूटता।

साचा अमृतसर काया माहिं

वह अमृत तेरे अंदर है। तीनों गुणों के पार दशम् द्वार में वह अमृतसर, अमृत का सरोवर है। सुरत बाहर से हटेगी तो अंतर रस आएगा। तो पहली चीज़ यह है कि बाहर फैलाव से सुरत को हटाए और अंतर में जो अमृत धारा बह रही है उसे पा कर यह जी उठे। यह हर इंसान के अंदर है।

नौ दरवाज़े नवें दर फीके, एह अमृत दसवें चुवीजे॥

वह दसवां दरवाज़ा जहां अमृत चूता (बरसता) है। नौ दरवाज़े तो प्रकट हैं, दो आंखें, दो कान, दो नासिका, ज़बान और दो नीचे के दरवाज़े। दसवां निज घर जाने का दरवाज़ा है जिसके बारे में कहा है:

अंधे दर की खबर न पाई॥

बाहर नौ दरवाज़ों से हट कर सुरत को आंखों के पीछे ले जाए। वहां अमृत की धार बह रही है जिसे पी कर पिंड में यकसुई (एकाग्रता) हासिल (प्राप्त) होगी। फिर पिंड से अंड, से ब्रह्मांड और उस के पार सफ़र शुरू होगा। सो फरमाते हैं मन को उलटो, बाहर से हटा कर इसे अंतर टिकाओ।

पांचों इंद्री उलटी तानो।

ये इंद्रियां जो इसके बाहर फैल रही हैं इन्हें अंतर्मुख करो। यह आंखें जो अब बाहर देख रही हैं इन्हें बाहर से हटा कर अंतर्मुख देखो।

ऐ नत्रो मेरेयो हर बिन अवर न देखो कोई॥

और

ऐ श्रवणो मेरेयो सुनो सत बाणी॥

यह वाणी क्या है?

अंतर में ज्योति है और उस ज्योति में वह वाणी हो रही है। कब से हो रही है वह वाणी?

बाणी वज्जी चौहजुगी सच्चो सच सुणाए॥

कि चारों युगों से यह वाणी बजती चली आ रही है। अब अक्षर तो न रहा। आगे और निर्णय किया है।

गुरु की वाणी सब माहिं समाणी
आप कथी ते आप बखाणी॥

वह गुरु की वाणी है। उस का ताल्लुक पूरे गुरु से, किसी अनुभवी महात्मा से मिलेगा।

यह वाणी जिस पर हम इस वक्त विचार कर रहे हैं उस वाणी की खबर देती है जिसे पकड़ कर आत्मा पहले पिंड से अंड और फिर अमृतसर कहो, हौज़े कौसर कहो, प्रयागराज कह लो, वहां पहुंचती है। वहां स्नान करने से आत्मा के तीनों गिलाफ (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) उतर आते हैं और वह मन और माया से आज़ाद हो जाती है। वहां आकर आत्मा को होश आती है कि मैं आत्मा हूं।

बोलो भैया राम की दुहाई, बोलो भैया राम की दुहाई॥
पीवो संत सदा मत दुर्लभ, सहजे प्यास बुझाई॥ इक रहाओ॥

अब कहते हैं, ऐ भाइयो, राम की दुहाई है तुम्हें, परमात्मा के लिए मेरी बात सुनो, इस अमृत रस को पियो। कैसे पीयोगे इसे? संतों की मत ले कर जो हमेशा से एक चली आती है। संतों का मिलना दुर्लभ है, जैसे पहले कह आए हैं कि "तेरा सेवक एक अद्धा कोई।" परमात्मा का सच्चा आशिक लाखों करोड़ों में कोई एक आध ही होता है। वे अनुभवी होते हैं और अनुभव देते भी हैं। तो ऐसे सच्चे प्रेमी संतों की मान लो। वे क्या कहते हैं? वे कहते हैं तेरे अंदर अमृत है, चल अंतर। वह अमृत दसवें

द्वार पर बरसता है, उसे पियो। तुन्हें राम की दुहाई, परमात्मा का वास्ता है तुम्हें।

हमारी सुरत इंद्रियों द्वारा फैल रही है। वह रस अंतर दसवें द्वार में है। जब तक वह अमृत न पिये जन्म मरण नहीं चुकता, वह अमृत पी लो तो सब प्यास बुझ जाएगी। संतों की अटल मत है। यह Unchangeable Law है, इसमें अदल बदल की गुंजाइश नहीं।

आगे कहते हैं "इक रहाओ।" मतलब यह है कि यह मुसल्लमा हकीकत है। यह अनुभव सिद्ध और अटल सत्य है, इसे हृदय में धारण कर लो। यह शब्द जो हम पढ़ रहे हैं कबीर साहब का है मगर यह गति जिसका इस शब्द में ज़िक्र है कहां से मिलेगी? संतों से। किसी आमिल के पास जाने से मिलेगी।

संतन मो को पूंजी सौंपी॥

वह सामने बिठा कर थोड़ा तजरबा करा देगा अंदर जाने का। किसी भी शरीयत (समाज) में रहो अंतर जाने का रास्ता सबके लिए एक है। वह नाम मार्ग है। इंद्रियों का घाट लांघ कर ऊपर आओ तो नाम मिलता है। नीचे छः चक्रों में नाम नहीं। निचले चक्रों को तय कर के ऊपर आने का आसान रास्ता सुमिरन योग है। प्राण योग वगैरह और भी कई तरीके हैं मगर वे मुश्किल हैं। वहां तक, यानी नौ द्वारों के ऊपर आने के मुख्तलिफ (भिन्न भिन्न) रास्ते हैं पर आगे सिर्फ़ शब्द मार्ग है। जो तुम्हें वह रास्ता दे उसे साधु कह लो, संत कह लो, उस्ताद कह लो, गुरु कह लो, कुछ ही नाम रख लो उसका।

(13) भै विच भाव भाए को बूझे हर रस पावे भाई॥

(14) जेते घट अमृत सब ही मंह भावै तिसै पियाई॥

अब फरमाते हैं अगर संत महात्मा मिल जाए तो उसके पास जाने से आदमी के दिल में डर पैदा होता है कि यह पूछेगा, वह जानी जान है, पूछेगा, "तुम ने क्या किया।" फिर उस के पास बैठ कर परमात्मा का ख्याल आएगा। जैसे पहलवान के पास बैठ कर ताकत की झलक मिलती है, इसी तरह आमिल (अनुभवी पुरुष) के पास जाने से डर पैदा होता है कि यह आमिल है, सब जानने वाला है, हमारी सब कमज़ोरियों को जानता

है मगर वह (महात्मा) पर्दापोश (दूसरों का पर्दा रखने वाला) होता है, किसी का पर्दा फ़ाश नहीं करता, सब को प्यार से समझा देता है।

दो तरफ का डर होता है। एक यह डर कि जिस्म न जाने कब खत्म हो जाए, जो करना है अब कर लो। दूसरे यह डर कि हमारे फलां (अमुक) कर्म अच्छे नहीं, इन्हें छोड़ दो। ये दो तरह के डर हैं। यह दोनों सामान बनने से जीवन नेक पाक होता चला जाएगा। साथ ही साथ अभ्यास हो तो प्रेम और भय के अंतर में रस आने लगेगा।

एक बार उपदेश ले लिया और फिर शकल न दिखाई, इस तरह काम नहीं चलेगा। जाओ, आमिल के पास जाओ, कमज़ोर हो तो भी उसके पास जाओ, तुम्हारे संभलने का सामान हो जाएगा।

फिर फरमाते हैं कि जिस अमृत का हम ज़िक्र कर रहे हैं वह हर इंसान के अंदर है चाहे वह हिंदू है, मुसलमान है या ईसाई।

घर ही में अमृत भरपूर है, मनमुक्खां साद न पाया॥

जो मनमुख हैं, जो मन का मुंह बने हुए हैं, जो मन के कहने पर चलते हैं, जिन की तवज्जो इंद्रियों द्वारा बाहर फैली हुई है, वे इस रस से खाली रह जाते हैं। इंद्रियों द्वारा जो सुरत बाहर फैल रही है उसे Invert करो (अन्तर्मुख करो) तो वह रस मिलेगा । मोमिन (आस्तिक) हो या काफ़िर (नास्तिक), हर इंसान के अंदर अमृत भरपूर है लेकिन यहां हालत यह है किः

Water water everywhere but not a drop to drink.

जिसे मालिक चाहे और जिस पर वह आप दया करे वह अमृत को पा सकता है। दिल की सच्ची तड़प और दर्द भरी पुकार जब परमात्मा तक पहुंचती है मालिक की दया से किसी कमाई वाले महात्मा की सोहबत (संगत) नसीब होती है। वह पूर्ण युक्ति दे और यह उस युक्ति को हासिल करके कमाई करे तो ज़िंदगी का मकसद हल हो जाता है और वह अमृत मिल जाता है जिसे पीने से जन्म-मरण चुक जाता है।

सिकंदर बादशाह को आबेहयात (अमृत) पीने का शौक था। हज़रत खिज़र उसे आबेहयात (अमृत) चश्मे (सरोवर) के किनारे ले गए। वहां अंधेरा था। सिकंदर डर कर वापस आ गया। यह इशारा है, उस अंधेरे

में ही अमृत यानी आबेहयात है। महात्मा के पास बैठ कर सारी बात साफ हो जाती है बल्कि वह खुद मदद दे कर तजरबा करा देता है। यह उस की बख्शिश (दया) है, यहां ज़ोर नहीं चलता। गुरु नानक साहब ने 'जपजी' साहब में लिखा हैः

जोर न जुगत छुटे संसार ॥

आगे व्याख्या करते चले जाते हैं कि बिना दया के खाली ज़ोर से, यत्न या कोशिश से यह दौलत नहीं मिलती। आखिर में कहते हैंः

जिस हत्थ जोर कर वेखे सोए॥

कि जिस के हाथ में ताकत है ज़ोर है वह ज़ोर लगा कर देख ले। जब अंतर में सच्ची तड़प, सच्ची भूख होगी मालिक के मिलने की तो मालिक अपने तक लाने का आप सामान कर देगा।

(15) नगरी एकै नौ दरवाजे धावत बरज रहाई॥

(16) त्रिकुटी छूटे, दसवां दर खुले ता मन खीवा भाई॥

यह शरीर रूपी जो नगरी है इस के नौ दरवाज़े हैं जिन से हमारी सुरत बाहर फैल रही है। कहते हैं इसे अंतर्मुख करो अगर इस दौलत को पाना है।

नौ घर देख जो कामण भूली वस्तु अनूप न पाई॥

घर की मालिक सुरत इंद्रियों द्वारा बाहर फैल रही है और घट के अंदर की सारी पूंजी लूटी जा रही है।

बाहर का सारा ज्ञान दृश्य का ज्ञान है। संतों की नज़र में दृश्य का सारा ज्ञान अविद्या है। इंद्रियों को उलट कर अंतर में जो ज्ञान मिलता है वह पराविद्या है, वह अनुभव का ज्ञान है। वह असल चीज़ है और इंसान के अंदर है। परमात्मा ने एक जैसी बनावट, एक जैसी Construction सब की बनाई है। जो इस का तजरबा और अनुभव नहीं करा सकता गुरुवाणी की निगाह में वह गुरु कहलाने का हकदार नहीं।

गुरु काढ तली दिखलाया॥

और कबीर साहब ने तो यहां तक कहा हैः

माय मूंडो तिस गुरु की जाते भरम न जाये॥

आम तौर पर जो गुरु मिलते हैं वे खाली पढ़ने पढ़ाने में लगाए रखते

हैं, यह करो, वह करो, मर कर गति हो जाएगी। जब लोगों को इन बातों से कुछ हासिल नहीं होता तो वे गुरु के नाम ही से नफरत करने लगते हैं। सच कड़वा होता है मगर कहना ही पड़ता है। सांप का डरा हुआ रस्सी से भी डरता है। इसी लिए लोग साधु महात्मा के नाम से बचने लगे हैं। ये जो लैक्चरार और प्रचारक नज़र आते हैं इन की तह में जाओ, सब रोज़गार और पेट धंधा ही मिलेगा। हज़ूर फ़रमाया करते थेः

किसी ने खोती वाही किसी ने पोथी वाही।

अर्थात् किसी ने गधे हांक कर रोजगार पैदा कर लिया, किसी ने पोथी (धर्म पुस्तक) से रोज़गार पैदा कर लिया। कहीं कहीं कोई महात्मा मिलता है वरना सब पेट प्रचार हैं। बहुत कम लोग हैं जो रूहानियत (आत्म विद्या) के आमिल (अनुभवी) और माहिर (ज्ञाता) हैं। बाकी सब लफ्फाज़ी (वाचक ज्ञान) और ज़बानी जमा खर्च है। बड़े बड़े लैक्चरार जिन को स्टेज पर बोलते देख कर आप रोने तक लग जाएंगे, उन से पूछो कि अंतर में क्या देखा तो गुम सुम रह जाएंगे।

मुझ से भी कहा गया था कि "हमारे साथ मिलकर काम करो, जो आएगा उसमें से हिस्सा बांट लेंगे।" मैंने कहा, "मुझे माफ़ करो। मुझे पैंशन मिलती है और वह मेरे लिए काफ़ी है।" वे अपना सा मुंह लेकर चले गए। दुनिया में इतना धोखा कहीं नहीं है जितना परमार्थ के प्रचार में है। यह मैं तजरबे के आधार पर कह रहा हूं। इस में ज़रा भी मुबालिका (बढ़ा चढ़ा कर कहना) नहीं।

आगे फरमाते हैं कबीर साहब, "त्रिकुटी छूटे दसवां द्वारा खुले।" इंद्रियों को उलटोगे तो पहले पिंड से छुटकारा होगा। जब तक तवज्जो बाहर फैली हुई है अंतर का रस नहीं मिल सकता। इस के लिए अंतर्मुख होना पड़ेगा। यही एक रास्ता है। जो पहले गए इसी रास्ते से गए। जो आयंदा (भविष्य में) जायेंगे इसी रास्ते से जाएंगे। लेकिन इस रास्ते का मिलना आमिल महात्मा का मुहताज है। ऐसा महात्मा जिस में समर्था (सामर्थ्य) है, जो सामने बिठा कर तजरबा करा सकता है, चाहे थोड़ा ही हो। फिर आगे आप Develop कर लो, उसे और बढ़ा लो।

(17) अभय पद पूर तापु तेह नासे कहे कबीर बिचारी॥

(18) उलट चलंते एह पद पाया जैसे खोंद खुमारी॥

यहां आकर आप अभय पद में पहुंच जाओगे, यहां तीनों ताप (अधिभौतिक, आध्यात्मिक, आधिदैविक) छूट जायेंगे। जब इंद्रियों के घाट से ऊपर तीन गुणों के पार जाकर अमृत पान कर लोगे तो आगे अभय पद है।

बेग़म पुरा शहर को नाओं।

जहां ख्याल है न चेष्टा, सरूर ही सरूर (मस्ती) है, आनंद ही आनंद है, वहां पहुंचने का ज़रिया है गुरु।

जिस का ग्रह तिन दिया ताला कुंजी गुर सौंपाई॥

अनोकों उपाय कर लो। जब तक किसी अनुभवी पूर्ण महात्मा के पास न आओगे अंतर का अंधेरा दूर नहीं होगा, यह गोरखधंधा हल नहीं होगा और वह गति नहीं मिलेगी जिस का पता ऊपर की कड़ी में दिया गया है। गुरु दो चीज़ें देता है। प्रथम पूर्ण युक्ति इंद्रियों को उलटने की, उन्हें अंतर्मुख करने की, दूसरे अपनी दया-मेहर का उभार देकर वह अंतर का अनुभव कराता है।

यह मुअम्मा (पहेली, गुत्थी) हर इंसान को हल करना है। यह Man problem (मनुष्य जाति की) है। इंद्रियों के घाट से ऊपर आने का मुअम्मा (सर्द) जिस से सब आलाइशें (मैल, विकार) छूट जाती हैं।

इंसान इंसान है चाहे वह हिंदू हो, मुसलमान हो या ईसाई। सदाचार का जीवन व्यतीत करते हुए इंद्रियों के घाट से ऊपर आओ और हौमें (अंहकार) की मैल धुल जाए तो जीवन सफल हो गया।

श्री गुरु अर्जुन साहब ने वाणी एकत्र की तो उन्होंने केवल इस बात को देखा कि पूर्ण पद को कौन पहुंचा और उन सब महात्माओं की वाणी एकत्र करके गुरु ग्रंथ साहब में शामिल कर दी जो पूर्ण पद को पहुंचे। चुनांचे उस में रविदास चमार, नामदेव जी छीम्बा और कबीर दास जुलाहा, सभी महापुरुषों की वाणी मौजूद है। जब हम गुरु ग्रंथ साहब के आगे मस्तक निवाते हैं तो हम सब महात्माओं को नमस्कार करते हैं। यह एक Banquet hall of spirituality है, रूहानियत का ज्याफ़तखाना

(पकवान शाला) है जिस में रूह की गिज़ा (खुराक) है। आज हमारे धर्म के अड्डों (केन्द्रों) की क्या हालत है? मुसलमान हिंदुओं के मंदिर में नहीं जाता और हिंदू मुसलमान की मस्जिद में नहीं जाता। आज इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि सब मिल कर जीवन की इस गुत्थी को सुलझाने के मसले (समस्या) पर विचार करें। हमारे हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) फरमाते थे कि कोई ऐसा Common platform (सांझी धरती) चाहिए जहां लोग अपनी अपनी शरीयत, बोली रस्म रिवाज रखते हुए नेक पाक जीवन रख कर परमात्मा को पाने के मसले (समस्या) पर विचार करें। अब फरमाते हैं:

उलट चलंते एह पद पाया, जैसे खोंद खुमारी।

फरमाते हैं इंद्रियों को उलटने का रास्ता मुश्किल तो है लेकिन यह जो आनंद और नशा है वह उलटे रास्ते पर चलने ही से मिलेगा। खोंद कहते हैं अंगूर को। यह मिसाल दी है कि जैसे अंगूरी शराब पी कर मस्ती आती है ऐसे ही निजानंद की महवियत (तन्मयता) में दुनिया माफ़ीहा (लोक और परलोक) को भूल जाओगे। इंद्रियों का घाट ही न रहा तो दुनिया कहां रही।

ख्वाजा हाफ़िज इसी का ज़िक्र करते हैं कि रोज़े अव्वल से (सृष्टि की रचना के प्रथम दिवस से) परमात्मा ने यह शराब बनाई है।

शम्स तबरेज़ कहते हैं कि मैं अब इतना मस्त हो गया हूं कि सब दरोदीवार (दरवाज़े और दीवारें) मुझे देख कर मस्त हैं। जिस से मेरी आंखें चार हुईं वह नशे में चूर है। रेगिस्तान (मरूस्थल) मस्त है, उस में चलने वाले ऊँटों की कतारें मस्त हैं और उन के सवार भी मस्त हैं।

गुरु नानक साहब को बाबर बादशाह ने भांग का प्याला पेश किया तो वे बोले, "तेरा यह भांग का प्याला पी लूं तो ज़्यादा से ज़्यादा सुबह से शाम तक मस्ती रहेगी, मेरे पास नाम का वह नशा है कभी नहीं उतरता।"

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात॥

मौलाना रूम लिखते हैं कि मैं मर जाऊँ और मेरे जिस्म की खाद जिस ज़मीन में डाली जाए उस ज़मींन में गंदम (गेहूं) बो दी जाए और

उस गंदम की रोटी तंदूर में पकाई जाए तो तंदूर के शोले (आग की लपट) भी मस्ती से लबरेज़ (चूर) होंगे। फिर जब रोटी पके तो खाने वाले का तो ज़िक्र ही क्या रोटी परोसने वाला भी मस्त हो जाए, इतनी मस्ती मुझ में है। कौन से लफ़्ज हैं जो इस मस्ती को ब्यान करें। दुनिया की मस्ती को ब्यान करने के लिए ही लफ़्ज नहीं मिलते तो आत्म-रस की मस्ती के लिए लफ़्ज कहां से मिलेंगे। जो सारी उम्र इंद्रियों के घाट में फंसे रहे उन के अंतर में यह दौलत दबी हुई आई और दबी हुई चली गई। उनका जीवन अफल (निष्फल) चला गया।

यह दौलत हर इंसान की मिरास है। जिसे महात्मा मिल गया और उस ने उसके वचनों पर फूल चढ़ाए और उस की दया मेहर से इस दौलत को पा लिया उसने अपना जीवन सफल कर लिया। जिसे महात्मा न मिला उस का जीवन असफल चला गया। इस शब्द में कबीर साहब ने परमात्मा को पाने का रास्ता बहुत खूबसूरती से ब्यान किया है। वे फरमाते हैं कि जीवन नेक पाक बनाओ और अपने अंदर की पड़ताल, Self-introspection करो। शुरू शुरू में यह मालूम होगा कि हम ने कोई पाप ही नहीं किया। रोज़ रोज़ अंदर की पड़ताल और इसके साथ ही साथ सत्संग करो। तुम्हारे जीवन का Angle (दृष्टिकोण) बदल जाएगा, पाप पाप और पुण्य पुण्य मालूम होगा। महात्मा की नज़र में पाप पुण्य की तमीज़ (फर्क) यह है कि जो काम मन-इंद्रियों से ऊपर आने में, आत्मा को जानने और परमात्मा को पाने में मददगार हों वे सब पुण्य हैं और जो इन कामों में रुकावट डालें वे सारे काम पाप हैं। यह है महात्मा के नज़दीक पाप पुण्य की तारीफ (परिभाषा), आप की समझ में खुद-बखुद आ जाएगा देखकर।

एक दफा एक आदमी महर्षि व्यास के पास गया और कहने लगा कि मुझे धर्म और अधर्म में क्या फर्क है, यह समझ में नहीं आता, बहुतेरी किताबें पढ़ कर समझने की कोशिश की है।

महर्षि बोले, "धर्म का सार थोड़े लफ़्जों में यह है कि जो तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ सलूक करें, वैसा ही सलूक तुम लोगों से करो।" क्या हम चाहते हैं कि कोई हम से धोखा करे, हमारी निंदा करे, धड़ेबंदी

करे, हमें मारे? हम झूठ पर गुस्सा करते हैं। झूठ, फरेब, धोखा कोई हम से करे तो गुस्सा आता है। ये सब बातें जो तुम नहीं चाहते कि लोग तुम से करें तो आप खुद भी दूसरों के साथ ऐसा ही सलूक करो। किसी से दगा, फरेब न करो, किसी की निंदा न करो, नेक पाक पवित्र जीवन बनाओ, ख्याल में भी पवित्रता रहे। फिर नम्रता धारण करो। लोग जिस्म और जिस्मानियत ही के फ़र्ज पूरे करने ही को दीन ईमान बनाए बैठे हैं। जिस्म की देखभाल करो। मेहनत का लिहाज रखो। महात्मा यह नहीं कहता कि जिस्म को न पालो या जिस्म के मुतल्लिक (बारे में) अपने फर्ज़ पूरे न करो। तुम जिस्म रखते हो, इसे बढ़ाओ मगर तुम आत्मा भी रखते हो। Perfect (पूर्ण) इंसान वह है जिस के तीनों पहलू मुकम्मल हों। पहले सही मायनों में इंसान बनो। नेक पाक जीवन बनाओ, सदाचार को धारण करो। Ethical life is the stepping stone to spirituality. सदाचार परमार्थ का ज़ीना (सीढ़ी) है। यह बुनियाद है जिस पर रूहानियत की ईमारत खड़ी होगी। सो पहले यह काम करो। फिर महात्मा जो उपदेश दे उस पर अमल करो। जो वह कहे उसके वचनों पर फूल चढ़ाओ। तुम्हारे अंदर सुख और संतोष के नशे के खज़ाने भरे पड़े हैं। यह जिस्म एक दिन टूट जाएगा। इसके रहते हुए ही अपना काम कर लो। हम ने बहुतों को अपने कंधे पर लाद कर श्मशान भूमि में पहुंचाया है। हमने इसी तरह एक दिन यहां से जाना है। यह जिस्म हमेशा नहीं रहेगा।

राणा भी राव ना को रहे रंक न तंग फकीर॥
इक तो सिंहासन चढ़ चले इक बंधे जात जंज़ीर॥

जो घर छड्ड गंवावणा सो लग्गा मन माहिं॥
जित्थे जाए तुध वरतणा तिस की चिंता नाहिं॥

अगर जीते जी पिंड से ऊपर आ कर अगली दुनिया का, जहां मर कर जाना है, तजरबा कर लिया तो फिर मौत का क्या डर रहेगा? यह चीज़ सब के अंदर है। किसी आमिल के पास बैठ कर अनुभव प्राप्त कर लो तो जीवन सफल हो जाएगा।

◆◆◆◆◆